ISSN:2583-8849

दादू दयाल

1-

राम सँभालिये रे, बिषम दुहेली बार॥
मंझि समंदा नाव री रे, बूड़े खेवट बाझ।
काढ़नहारा को नहीं रे, एक राम बिन आज॥
पार न पहुँचै राम बिन, मेरा भौजल माहिं।
तारणहारा एक तूँ, दूजा कोई नाहिं॥
पार परोहन तौ चलै, तुम खेवहु सिरजनहार।
भौसागर में डूबिहै, तुम बिन प्राण-अधार॥
औघट दरिया क्यों तिरै, बोहिथ बैसनहार।
दादू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार॥

2-

मेरे मन भैया राम कहौ रे॥
राम नाम मोहिं सहजि सुनावै।
उनहिं चरण मन कीन रहौ रै॥
राम नाम ले संत सुहावै।
कोई कहै सब सीस सहौ रे॥
वाही सौं मन जोरे राखौ।
नीकै रासि लिये निबहौ रे॥
कहत सुनत तेरो कछू न जावै।
पाप निछेदन सोई लहौ रे॥
दादू रे जन हरि गुण गावो।
कालहि जालहि फेरि दहौ रे॥

3-

इत घरि चोर न मूसै कोई।
अंतरि है जे जानैं सोई॥
जागहु रे जन तत न जाइ, जागत है सो रह्या समाइ॥
जतन जतन करि राखहु सार, तसकर उपजै कौंण बिचार॥
इब करि दादू जानैं जे, तौ साहिब सरनागति ले॥

4-

काहे रे मन राम बिसारे।
मनिषा जनम जाइ जिय हारे॥
मात-पिता को बंध न भाई।
सब ही सुपिना कहा सगाई॥
तन-धन-जोबन झूठा जाणी।
राम हदै धरि सारँग प्राणी॥
चंचल चित बित झूठी माया।
काहे न चेतै सो दिन आया॥
दादू तन-मन झूठा कहिये।
राम चरण गहि काहे न रहिये॥

5-

मोह्यो मृग देखि बन अंधा।
सूझत नहीं काल के फंदा॥
फूल्यौ फिरत सकल बन माहीं।
सिर साँधे सर सूझत नाहीं॥
उदमद मातौ बन के ठाट।
छाडि चल्यौ सब बारह बाट॥
फँध्यो न जानै बन के चाइ।
दादू स्वाद बँधानौ आइ॥

6-

झूठे अंधे गुर घणें, भरंम दिखावै आइ।
दादू साचा गुर मिलै, जीव ब्रह्म ह्वै जाइ॥

हस्ती छूटा मन फिरै, क्यूँ ही बंध्या न जाइ।
बहुत महावत पचि गये, दादू कछू न बसाइ॥

दादू प्रीतम के पग परसिये, मुझ देखण का चाव।
तहाँ ले सीस नवाइये, जहाँ धरे थे पाव॥

जहाँ आतम तहाँ रांम है, सकल रह्या भरपूर।
अंतर गति ल्यौ लाई रहु, दादू सेवग सूर॥